ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
शोध संचार बुलेटिन
January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 89-92
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

डॉ० श्रीदेवी चौबे*
श्रीमती शबीना नाज**

शोध सारांश

'स्त्री–मन' को समझ न पाना ही स्त्रियों की दुर्दशा का कारण है। स्वतंत्र्योत्तर स्त्री लेखन को नई दिशा प्रदान करने वाली कथाकार उषा प्रियंवदा ने अपने कथा साहित्य में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से 'स्त्री पात्रों' के अंतरस्थ का सूक्ष्म पर्यवेक्षण कर विविध मनोवृत्तियों एवं मनोग्रंथियों का रहस्य खोलने का प्रयास किया है। आधुनिक युग के संघर्षमय जीवन में संकुचित परिधि में जीती घरेलू स्त्री हो, या कामकाजी स्त्री के रूप में दोहरी जिम्मेदारी निभाती कामकाजी स्त्री, अविवाहित रहकर स्वतंत्र जीवन जीती स्त्री हो या किसी के साहचर्य की रिक्तता अनुभव करती स्त्री हो, वर्तमान परिस्थिति व घटना का प्रभाव उसके अंतर्मन में व्याप्त संत्रास, पीड़ा, कुंठा, नैराश्य, दमन, अंतर्द्वंद्व कम होने की तुलना में बढ़ता ही जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप स्त्री मानसिक कग्णता की शिकार होकर अपना जीवन उद्देश्यहीन मानकर आत्महत्या जैसे कृत्य करने विवश हो जाती है। उसकी आंतरिक टूटन की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता, अपने प्रसन्न मुख के आवरण में वह अपनी पीड़ा छिपा जाती है। अतः मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से स्त्री के व्यवहार को उसके परिवेश व अतीत से जोड़कर देखने का प्रयास किया जाए तो, उसके मन में दमित कामनाएँ, स्मृतियाँ, हीन–भावना, उभरकर सामने आती है, जिसके विश्लेषण से कुंठित, द्वंद्वग्रस्त, आत्मबल की कमी से जूझती, दुर्बल मानसिकता युक्त स्त्री में स्वत्व की चेतना जागृत कर उसे नकारात्मक सोच–विचार से मुक्त कर सकारात्मक चयन का विकल्प प्रदान कर उसके व्यक्तित्व विकास का प्रयास किया जा सकता है, जो भविष्य में 'स्त्री–मुक्ति' के संदर्भ में एक सार्थक कदम सिद्ध होगा।

Keywords : मनोवृत्ति, अंतर्द्वंद्व, कुंठा, अहम्, व्यथा, आत्मबल, नकारात्मक सोच, व्यक्तित्व, काम–भावना।

मानव मन का विश्लेषण ही मनोविज्ञान है। मनोविज्ञान के अंतर्गत मनुष्य के मानसिक संवेगों, आंतरिक अनुभूतियों, काम–भावना, भय, स्मृति, व्यक्तित्व, अंतर्द्वंद्व आदि का विश्लेषण परक अध्ययन किया जाता है। स्वातंत्र्योत्तर कथाकारों में बहुप्रशंसित 'उषा प्रियंवदा' ने अपने कथा साहित्य में स्त्री पात्रों की मनोवृत्तियों की विवेचना उनके बाह्य क्रियाकलापों के स्थान पर उनकी मानसिक सोच–विचार, भाव, व्यक्तित्व, इच्छा शक्ति आदि को महत्व देकर किया है। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद भी मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित कहानी को सर्वोत्तम मानते हैं।

उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य यथार्थ पर आधारित है। इन कहानियों में स्वतंत्रता पश्चात् तीव्रता से परिवर्तित राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों का प्रभाव भारतीय परिवेश में विशेषकर स्त्री पात्रों के पारिवारिक, सामाजिक बिखराव, मूल्य–विघटन, अंतर्द्वंद्व, अलगाव बोध, व्यक्ति निष्ठा, अस्तित्व बोध एवं मनोग्रंथियों के सूक्ष्म अंकन के रूप में परिलक्षित होता है। उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में स्त्री पात्र विविध मनोग्रंथियों का रहस्य खोलते हैं, उनके मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को स्पष्ट करते हुए लेखिका लिखती हैं– "मेरे पात्र आधुनिक शिक्षित स्त्री है। वह परंपरा को स्वीकार नहीं करती, उनके लिए अपनी सोच, अपनी राह, अपने आप बनानी पड़ती है और इसलिए अलग राह पर चलते हुए उसे इन तमाम प्रश्नों को सुलझाना पड़ता है, जो कि आज की स्त्री के सामने हैं। समाज के बंधनों को तोड़ पाना? यही मानसिक उहापोह ही कहानी की बैक्बोन है। मेरी अधिकांश कहानियाँ उसी प्रकार मानसिक द्वंद्व को पेश करती है।"[1]

इस प्रकार मानसिक द्वंद्वग्रस्त नारी घुटन, संत्रास, कुंठा व तनाव का सामना करते हुए दिखाई देती हैं।

उषा प्रियंवदा की कहानियों में स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सिगमंड फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धांत के अंतर्गत मन की संरचना के दो स्तर पहला गत्यात्मक स्तर (इदम, अंहम्, पराअहम) तथा दूसरा स्थूल रेखीय (चेतन, अवचेतन, अचेतन) माना गया है। फ्रायड के सिद्धांतों पर आगे कार्य करते हुए एडलर ने 'हीनभावना' को व्यक्ति के उत्थान एवं पतन के लिए महत्वपूर्ण

*शोध निर्देशक – शोध केन्द्र, शास. बी.सी.एस. पी.जी., धमतरी (छ.ग.)
**शोधार्थी – शोध केन्द्र, शास. बी.सी.एस. पी.जी. कॉलेज, धमतरी (छ.ग.)

कारक माना तथा कार्ल युंग ने अपने सिद्धांत में विचार, भाव, संवेग तथा अंतर दर्शन को मन की शक्ति के रूप में विश्लेषित करते हुए व्यक्ति को अंतर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी कहा है।

अतः उपर्युक्त वर्णन के आधार पर उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में स्त्री पात्रों को फ्रायड, एडलर एवं युंग के मतानुसार विश्लेषण किये जाने पर अनेक मूल प्रवृत्तियाँ उजागर होती है, जैसे अहम भाव, काम–भावना, कुंठा, दमन, आत्मपीड़न, स्वप्न, अंतर्द्वंद्व आदि।

काम भावना – फ्रायड के अनुसार व्यक्ति के समस्त कार्य, व्यापार, व्यवहार एवं विचार काम भावना से प्रभावित होते है तथा काम भावना ही व्यक्ति के जीवन की प्रमुख भावना है। उषा प्रियंवदा ने काम विषयक भावनाओं को वैवाहिक एवं विवाहेत्तर संबंधों के रूप में चित्रित किया है। लेखिका ने अपनी कहानियों में यौनाकांक्षा को सहज, प्राकृतिक आवश्यकता पड़ने वाले प्रभावों को उजागर किया है। अधोलिखित कहानियों में यह प्रभाव परिलक्षित होता है–

टूटे हुए – असामान्य पुत्र के जन्म के पश्चात् तंत्री त्रिपाठी के जीवन में उसके पति से संबंध पूर्ववत् नहीं रह पाता तथा पुत्र की दशा से आंतरिक रूप से टूटी हुई वह अपने अतृप्त यौनाकांक्षा की पूर्ति एक ही जाति व भाषा – भाषी 'भास्कर' से करती है।

कितना बड़ा झूठा – इस कहानी में दो बेटियों की माँ किरण 'मैक्स' से विवाहेत्तर संबंध रखती है तथा उसे सूचित किए बिना मारिया से विवाह कर लिए जाने पर उसे पहली अनुभूति केवल गहरी निराशा की होती है, मैक्स के स्पर्श से वंचित रह जाने की।

प्रसंग – विदेश में कार्यरत अविवाहित डॉक्टर ममता राघव (विवाहित) से सशर्त प्रेम एवं यौन संबंध रखती है कि वह कभी भी उसके पारिवारिक जीवन की सीमा का अतिक्रमण नहीं करेगी, परन्तु प्रत्येक बुधवार वह सिर्फ राघव की प्रेमी बनकर रह जाती थी। उसकी ऊष्मा, उसके सान्निध्य को अंतिम बूंद की तरह निचोड़कर पीती हुई।

प्रतिध्वनियाँ – मुक्ति की चाह लिए वसु अपने पति के द्वारा तलाक दे दिए जाने पर वह इस 'मीनिंगलेस सी रस्म' से मुक्ति पाकर नलिन, विंस, पटनायक जैसे पुरुषों से उन्मुक्त यौन संबंधों में 'मादकता' का अनुभव करती है।

पूर्ति –अकेलेपन से व्यथित 'तारा' खुद को निर्बल मानकर अपने जीवन में एक बहुत बड़ा अभाव महसूस करती है। विवाहित 'नलिन' को देखकर वह उसके समान पति की कामना करती है तथा अनायास, परिस्थिति वश बन गए शारीरिक संबंध में तारा का समर्पण उसके अंतर्मन में गहरे सुख व तुष्टि का अनुभव दे जाता है।

ट्रिप – बच्चों के बोर्डिंग हाउस चले जाने के बाद नितांत अकेली सोनी अन्य पुरुष से अस्थायी संबंध बनाते रहती है, 'स्टीफान' के नैकट्य में भी दोनों प्रतीकारत् होते हुए भी एक–दूसरे के सम्मुख

कोई भी स्वयं को अधीर नहीं जताना चाहते ...

पुनरावृत्ति – सीधी–सादी संदीपा ... के जन्मोपरांत पुनः जुड़वा बच्चों को ... पश्चात् उसकी मृत्यु हो जाने पर अपना ... बैठती है– "अपने ऊपर चिरंतन (पति) की ... मारनी शुरू कर दी –हटाओ–हटाओ। उसके ... को नोचने लगे, जैसे किसी चिपकी हुई वस्तु को ... रही हो।"2

वैवाहिक संबंधों (काम) व गर्भधारण में ... असहमति या विरोध प्रदर्शन न कर पाने के कारण ... मानसिक रूग्णता का शिकार हो जाती है।

इस प्रकार उषा प्रियंवदा की कहानी में 'काम' ... रूप दृष्टिगोचर होते हैं जिनकी सकारात्मक पूर्ति होने ... ऊर्जावन तथा न्यूनता की दशा रोगग्रस्त कर देती है।

चांद चलता रहा – यौन शुचिता के पारंपरिक विश्वास ... विश्वास करने व अपनी शारीरिक पवित्रता को अमूल्य ... वाली रोहिणी शर्मा अपने मंगेतर अरविंद द्वारा विवाह पूर्व ... स्थापना को अनैतिक मानकर अस्वीकार कर देती है। ... मंगेतर के प्रति प्रेम प्रदर्शित करते हुए 'आत्मपीड़न' की ... संक्रिया सहते हुए पर पुरूषों की शैय्या संगिनी बनकर ... कामेच्छापूर्ण करने में पश्चाताप का अनुभव करती है।

अहम् भाव – फ्रायड मनोविश्लेषण में यह माना गया है कि ... (अहम् व स्व का पर्यायवाची) तर्क बुद्धि व वर्तमान पर आधारित होता है। अहम् की क्रियाएँ चेतन स्तर पर पारित होकर अचेतन स्तर तक चलती रहती है तथा इगो की सबलता को व्यक्ति के स्वस्थता का प्रतीक माना जाता है। इगो दुर्बल होने पर ... उत्पन्न होती है इगो में उचित–अनुचित का ज्ञान होता है।

उषा प्रियंवदा रचित कहानियों मान और हठ, अकेली ... एक कोई दूसरा, आधा शहर, जाले, जिंदगी और गुलाब के फूल ... चहार दीवारी आदि कहानियों में अहम् भाव स्वत्व के बोध ... निजता की चेतना के रूप में अभिलक्षित हुआ है। आत्मबोध व्यक्ति की इच्छा शक्ति को बल प्रदान कर व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है।

आधा शहर – अकेली, युवा, विधवा 'इला' द्वारा अपने सहकर्मी पुरुषों को अपने पास फटकने न देने व उनके आगे समर्पित न होकर अपने 'स्व' को महत्व देकर जीवन पथ पर अग्रसर होती है – "मैं जानती हूँ मैं क्या हूँ, आई एम अ गुड हयूमन बीइंग – मुझमें उदारता है, करूणा है, सच्चाई है।"3

मान और हठ – सुंदर अमृता विवाहोपरांत अपने कुरूप पति को देखकर इस अनमेल विवाह से व्यथित होकर कुंठाग्रस्त हो जाती है तथा मुकुल (पति) के पूछे जाने पर निडरतापूर्ण वास्तविकता से अवगत करा चुनौती देते हुए उच्च शिक्षा अर्जित कर आत्मनिर्भर बनती है।

अकेली आह – गौरी विजातीय 'रहमान' से प्रेम करने के कारण अपनी कठिनाई परंपरावादी, माँ के लांछनों का सामना करते हुए भी माँ के विरूद्ध जाकर विवाह नहीं करती तथा वह अपनी सकारात्मक सोच, सूझ–बूझ, इच्छा शक्ति के द्वारा अपने निर्णय पर अडिग रहती है, मैं समर्थ हूँ। मैं वहीं करूँगी जो मैं चाहूँगी।

एक कोई दूसरा – ऐश्वर्य पूर्ण जीवन एवं अपने अप्रतिम सौंदर्य के सराहे जाने का सुख पाकर भी नीलांजना प्रखर बुद्धिवाले डॉ. कुमार के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर विवाह करने से मना कर देती है कि चमकीले पत्थरों के ये टुकड़े मुझे अब न खरीद सकेंगे। मेरा समस्त व्यक्तित्व इस परिस्थिति को स्वीकार करने से विद्रोह कर रहा है।

जाले – पुरूषों से शत्–प्रतिशत समानता का दावा करने वाली 'कौमुदी' अपने अहम् भाव के कारण वह प्रोफेसर राजेश्वर के प्रति आकर्षित होकर भी उन्हें 'चुनौती' मानकर उचित अवसर आने पर झुका सकने की सोच रखती थी।

जिंदगी और गुलाब के फूल – भाई के नौकरी छूट जाने पर वृंदा नौकरी कर परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के साथ–साथ परिवार से जुड़े सभी निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त कर लेती है। बड़े भाई की राय को महत्व न देने के साथ उनके उलाहना व आदेश देने में उसका अहम् भाव प्रकट होता है।

अंतर्द्वंद्व – मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आंतरिक इच्छाओं, अभिलाषा में व उपलब्धियों के पूर्ण न होने में संवेगात्मक तनाव से उत्पन्न स्थिति द्वंद्वात्मक होती है। इन परिस्थितियों में व्यक्ति या तो बलपूर्वक अपनी इच्छाओं का दमन कर देता है या न कर पाने की स्थिति में अंतर्द्वंद्व से घिर जाता है। एडलर मनुष्य में अंतर्द्वंद्व के उत्पन्न होने का कारण उसकी कोई कमी या हीनता अथवा इच्छाओं के विघटन को मानते हैं। उषा प्रियंवदा के अनेक नारी पात्रों में यह मनोवृत्ति दिखाई देती है।

एक और विदाई – छह वर्षों का वैवाहिक जीवन पति के अनुरूप जी चुकी 'नमिता' अपने पति को छोड़कर अमेरिका से पी.एच.डी. पूर्ण करने का निर्णय लेना तथा पाश्चात्य परिवेश के अनुरूप स्वयं को ढाल न पाने के कारण अंतर्द्वंद्व से जूझती रहती है।

वनवास – आकर्षक 'विरंजन' ज्यों–ज्यों पाश्चात्य परिवेश के खुलेपन में पति का नीरस व्यक्तित्व एवं उनकी कमियों का बोध होता है, जैनिटर के व्यक्तित्व का खुलापन उसके अंतर्मन में द्वंद्व उत्पन्न करता है – "वह समझ नहीं पा रही थी, वह इतनी व्यग्र और आकुल क्यों है? अब तो सभी कुछ है, जीवन में पति, बच्चे, अपना घर और धन और क्या चाहिए?"4

स्वीकृति – इस कहानी की नायिका 'जपा' को आर्थिक सुदृढ़ता के लिए पति के द्वारा अन्यत्र अकेली रहकर नौकरी करने विवश कर दिया जाता है। वहाँ अपरिचित 'वाल' से मित्रता व उसके द्वारा अपनी भावनाओं, रूचि को महत्व दिए जाना, जपा को उसके निकट ले आता है, तब सामाजिक लोकलाज के बंधन तोड़कर सत्य की जगह 'वाल' का चयन कर पाने का अंतर्द्वंद्व उसके अंतर्मन में चलता रहता है।

संबंध – इस कहानी में 'श्यामला' अपने अस्तित्व में निस्संगता व पलायनवादी दृष्टिकोण के कारण 'सर्जन' के प्रेम को भी स्वीकार करने में स्वयं को द्वंद्वात्मक स्थिति में पाती है।

झूठा दर्पण – माता–पिता के वैचारिक मतभेद एवं पुत्री के विवाहोपरांत वैधानिक रूप से 'तलाक' लेने के निर्णय के लिए 'अमृता' स्वयं को जिम्मेदार मानती है व मित्र यति के प्रति आकृष्ट होकर अंतर्द्वंद्व से गुजरती है।

कुंठित नारी – आधुनिक मनोविज्ञान ने मन के सूक्ष्मतर स्तर को जानने का प्रयत्न किया है। व्यक्ति को अपने जीवन की आवश्यकताओं, कामनाओं को पूर्ण करने की चेष्टा को अनेक बाधाओं, असफलताओं व निराशा का सामना करना पड़ता है जिसके कारण उत्पन्न तनाव, कुण्ठा का कारण बन जाता है।

उषा प्रियंवदा की अनेक कहानियाँ पचपन खंभे लाल दीवारे, बिखरे तिनके नष्ट नीड़, मछलियाँ, दो अंधेरे, लई कोंपल, पैरंबुलेटर, दृष्टिदोष आदि कहानियों में कुंठित मनोवृत्ति उजागर हुई है।

पचपन खंभे लाल दीवारे – परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने में समर्पित 'सुषमा' अपने जीवन में उम्र में छोटे 'नील' का प्रेम पाकर भी रूढ़िगत मानसिकता, लोकलाज, के कारण उससे विवाह बंधन में नहीं बंध पाती। यहाँ लेखिका ने सुषमा की मनोदशा का अत्यंत सूक्ष्म अवलोकन किया है – "उसके चारों ओर दीवारे खींच गई थी दायित्व की, कुंठाओं की, अपने घर की गरिमा और परिवार की।"5

मछलियाँ – सीधी सरल, 'विजी' अपने प्रेमी 'मनीश' द्वारा विवाह का वादा कर विदेश बुलाए जाने पर परिवारजनों का विरोध सहकर वहाँ पहुँच 'मुकी' के प्रति आकर्षण को मनीश के विश्वासघात का कारण मानती है कि यदि मनीश पर विश्वास न किया होता तो शायद इस दशा तक न पहुँचती, यदि मुकी सी कुटिलता आती तो भी आज अकेले यों अपने से द्वंद्व न करना पड़ता।

बिखरे तिनके नया नीड़ – बिनब्याही माँ बनने व प्रेमी 'यश' द्वारा साथ न दे पाने, माता–पिता के द्वारा सामाजिक लोकलाज के कारण कुंठित नारी के मनोभावों को प्रदर्शित है।

दो अंधेरे – पति के विश्वासघात से दुखी 'कौशिल्या' आर्थिक परतंत्रता व दो बच्चों की जिम्मेदारियों के कारण पति को माफ कर अपना वैवाहिक जीवन बचा लेती है, परन्तु सदैव पति की ओर से सशंकित व कुंठित रहती है।

पैरंबुलेटर – मातृत्व सुख से वंचित 'कालिंदी' अपने भावी शिशु के ममत्व का प्रतीक, पैरंबुलेटर' को विकट से विकट आर्थिक परिस्थिति आने पर भी नहीं बेचती व ससुरालवालों के कटाक्षों से

आहत होकर अपने आप में सीमित कुंठित जीवन जीती है।

नई कोंपल – सामान्य रूपरंग वाली बिन्नों ससुरालवालों के तिरस्कार व पति के उपेक्षित व्यवहार के बावजूद भी समर्पित भाव से सबके लिए काम करते हुए कुंठित रहती है व किसी से भी इस बात की शिकायत नहीं कर पाती कि उसका पति उसे नहीं चाहता।

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में स्त्री पात्रों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर अपने मौलिक विचार प्रकट करते हुए डॉ. जयश्री लिखती हैं – "आपके कथा साहित्य में साठोत्तरकालीन से लेकर आज तक की नारी की मानसिकता, द्वंद्व तथा अहम् और स्वावलंबन को चित्रित किया गया है। आज की नारी अपने अस्तित्व की खोज में चल पड़ी है।"[6]

दमित भावनाएँ – फ्रायड के सिद्धांतानुसार मनुष्य के अचेतन मन में ऐसी आकांक्षाएँ, स्मृतियाँ और संवेदनाएँ रहती हैं। जिसे बार–बार दबाना या भूल जाना पड़ता है। ये दमित भाव तथा इच्छाएँ व्यक्ति के अचेतन मन में संगठित होकर उसके व्यक्तित्व में खिंचाव व संघर्ष की स्थिति उत्पन्न करते हैं इन्हें मानसिक ग्रंथियाँ कहा जाता है, जो मानसिक रोगों का कारण बनती हैं।

नींद – उपेक्षित अतीत की कटु स्मृतियाँ कथा नायिका के व्यक्तित्व में उदासीनता, बोझिलता व अकेलेपन की तीव्र अनुभूति का संचार करती है, किसी के साहचर्य का अभाव अंधेरी रात से भय व नींद न आने की दशा में परिलक्षित होता है – "नहीं मैं रूग्ण नहीं हूँ। न मुझमें कोई मानसिक विकृति है। मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ। मैं केवल साथ ढूँढती हूँ, कम्पैनियनशिप तुम्हें जिलाए रखने के लिए।"[7]

सुरंग – भाई के मृत्यु के बाद बेटियों से विरक्त माँ के उपेक्षित व्यवहार अपने में सिमटी बहन 'बेबी' व परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूर्ण करती 'अरूणा' अपने एकांकी जीवन की व्यथा, उद्देश्य व उल्लासहीन जीवन, आंतरिक रिक्तता, नैराश्य, नकारात्मक सोच, आत्मबल की कमी के कारण मानसिक रूप से कमजोर होकर आंतरिक टूटन के फलस्वरूप आत्महत्या का असफल प्रयास करती है।

कोई नहीं – सात वर्ष पूर्व प्रेमी अक्षय के चले जाने के बाद अपने अंतर्मन में विचारों व भावनाओं का द्वंद्व समाए, अतीत की स्मृतियों से निष्कृति के प्रयत्न में वर्तमान व भविष्य की कामनाओं का दमन करते हुए 'दमिता' उल्लासहीन जीवन जीती है, व पुनः अक्षय से मिलने पर उसे दुबारा खो देने के दर्द व आजीवन उसके साथ के कामनाबोध से उत्पन्न अंतर्मन की तड़प के आगे वह अनुभव करती है कि अब आत्मनियंत्रण खो देने की [...] उबर न पाएगी। अतः वह अनाहूत आँसुओं और [...] स्मृति को पीछे ठेल देती है।

मोहबंध – अचला अपने अतीत की स्मृति [...] नीलू व प्रेमी देवेन्द्र द्वारा किया गया विश्वासघात [...] आहत व घुटन के परिणामस्वरूप नर्वस ब्रेकडाउन [...] पहुँचा देता है। फलतः अपने बुझे हुए दिल, कामना [...] मन, खण्डित व्यक्तित्व तथा भय के प्रभाव से वह [...] भरोसा नहीं कर पाती लेकिन भविष्य में नीलू की [...] कारण उसके पति राजन का सकारात्मक दृष्टिकोण [...] वह स्वयं पर घटनाओं के दोषारोपण करने की प्रवृत्ति [...] अपने जीवन में उमंगों का अनुभव करती है मानो वर्षों [...] पश्चात् जागना, कुहासी भेदकर आच्छन्न चेतना का [...]

निष्कर्षतः मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुरूप उषा [...] कथा साहित्य में चित्रित स्त्री पात्रों की मनोवृत्तियों एवं [...] के विश्लेषण के माध्यम से वर्तमान स्त्री की वास्तविक [...] अवलोकन विविध मनोग्रंथियों, सकारात्मक–नकारात्मक [...] विचार एवं उनका व्यक्तित्व पर पड़ने वाले परिणाम के प्र[...] कर 'स्त्री चिंतन' को एक नया आयाम दिया जा सकता है [...]

निष्कर्ष – कथाकार उषा प्रियंवदा ने अपनी कहानियों [...] पात्रों को चुनौतीपूर्ण परिवेश के मध्य छोड़कर [...] मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए उनके सबल व्यक्तित्व [...] स्त्रियों के लिए प्रेरणास्त्रोत के रूप में प्रस्तुत कर उन्हें निज [...] चेतना, आत्मविश्वास, सुदृढ़, आत्मबल व उचित निर्णय [...] द्वारा स्वप्रेरित करने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ :–

1. पत्राचार के माध्यम से साक्षात्कार.
2. प्रियंवदा, उषा. संपूर्ण कहानियाँ. दिल्ली : राजक[...] प्रकाशन, 2015. पृष्ठ संख्या 399.
3. प्रियंवदा, उषा. संपूर्ण कहानियाँ. दिल्ली : राजकम[...] प्रकाशन, 2015. पृष्ठ संख्या 450.
4. प्रियंवदा, उषा. वनवास, पेंगुइन बुक्स, इंडिया, 2009. पृष्ठ संख्या 139.
5. प्रियंवदा, उषा. वनवास, पेंगुइन बुक्स, इंडिया, 2009. पृष्ठ संख्या 202.
6. बहाटे, डॉ जयश्री. उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में युगबोध. कानपुर : विद्या प्रकाशन, 2013. पृष्ठ संख्या, 176.
7. प्रियंवदा, उषा. कितना बड़ा झूठ. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1972. पृष्ठ संख्या 57.

❑❑❑